(छ) प्रथम सर्ग का सार लिखिए।

(ज) हंस की कारण्यावस्था का वर्णन कीजिए।

2×8=16[2½×8=20]

2. (क) किसी **एक** का उत्तर दीजिए–

(i) भवभूति की रचनाओं पर प्रकाश डालिए।

(ii) उत्तररामचरित के अंकों के नामकरण देने के साथ-साथ कारण भी बताइए। 8×1=8[10×1=10]

(ख) किसी **एक** की समीक्षा कीजिए–

(i) उत्तरे रामचरिते भवभूतिर्विशिष्यते।

(ii) कारुण्यं भवभूतिदेव तनुते। 8×1=8[10×1=10]

3. (क) किन्हीं दो श्लोकों की ही व्याख्या कीजिए–

(i) किन्त्वनुष्ठाननित्यत्वं स्वातन्त्र्यमपकर्षति।
सङ्कटा ह्याहिताग्नीनां प्रत्यवायैर्गृहस्थता॥

(ii) स एष ते वल्लभबन्धुवर्गः प्रासङ्गिकीनां विषयः कथानाम्।
त्वां नामशेषमपि दृश्यमानः प्रत्यक्षदृष्टामिव नः करोति॥

(iii) अपरिस्फुटनिस्वाने कृतस्थेऽपि त्वमादृशी।
स्तनयित्नोर्मयूरीव चकितोत्कण्ठितं स्थिता॥

(iv) एतद्धि परिभूतानां प्रायश्चित्तं मनस्विनाम्।
राजन्नपत्यं रामस्ते पाल्याश्च कृपणाजनाः॥

4×2=8[5×2=10]



(ख) किन्हीं दो सूक्तियों की व्याख्या कीजिए–

(i) तेजस्तेजसि शाम्यतु।

(ii) वृद्धास्ते न विचारणीयचरिताः।

(iii) सर्वमतिमात्रं दोषाय।

(iv) अव्याहतान्तःप्रकाशा हि देवताः सत्त्वेषु। 4×2=8[5×2=10]

4. (क) श्रीहर्ष की दार्शनिकता पर चर्चा कीजिए **अथवा** दमयन्ती का चरित-चित्रण कीजिए। 8×1=8[10×1=10]

(ख) किन्हीं दो श्लोकों की व्याख्या कीजिए–

(i) यदस्य यात्रासु बलोद्धतं रजः स्फुरत् प्रतापानलधूममञ्जिम।
तदेव गत्वा पतितंसुधाम्बुधौ दधाति पङ्कौभवदङ्कुतां विधौ॥

(ii) सरोरुहं तस्य दृशैव निर्जितं जिताः स्मितेनैव विधोरपि श्रियः।
कुतः परं भव्यमहो महीयसो तदाननस्योपमितौ दरिद्रता॥

(iii) रसैः कथा यस्य सुधावधारिणी नलः स भूजानिरभूद् गुणाद् भुतः।
सुवर्णदण्डैकसितातपत्रित ज्वलत् प्रतापस्वलिकीर्तिमण्डलः॥

(iv) अजस्रमभ्याससमुपेयुषा समं मुदैव देवः कविना बुधेन च।
दधौ पटीयान्समयं नयन्नयं दिनेश्वरश्रीरुदयं दिनेदिने॥

4×2=8[5×2=10]

June-2024

Roll No. .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

## M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

# 9014

## SANSKRIT

## (नाटक तथा काव्य)

(Core)

**Paper : MSKT-101**

**Time : 3 Hours]** **[Maximum Marks : Regular : 80, Private : 100**

नोट :- नियमित तथा पत्राचार के छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र **80** अंक का है, तो प्राइवेट छात्रों के लिए **100** अंक निर्धारित हैं।

1. संस्कृतभाषया उत्तरं ददत संक्षेपेण–

(क) नाटककार भवभूति का नाटककारों में स्थान वर्णित कीजिए।

(ख) उत्तररामचरित में प्रकृति-चित्रण प्रस्तुत कीजिए।

(ग) उत्तररामचरित के द्वितीय अंक का सार लिखिए।

(घ) उत्तररामचरित के पञ्चम-अंक वर्ण्य-विषय पर प्रकाश डालिए।

(ङ) श्रीहर्ष की प्रतिभा का परिचय दीजिए।

(च) नैषधीय चरित में वर्णित 'उच्चैःश्रवा' अश्व को नाम देना सार्थक है।



5. (क) किन्हीं **तीन** श्लोकों की व्याख्या कीजिए–

(i) तमेव लब्ध्वाऽवसरं ततः स्मरः शरीरशोभाजयजात मत्सरः।
अमोघशक्त्या निजयैव मूर्तया तया विनिर्जेतुमियेष नैषधम्॥

(ii) क्षणादथैष क्षणदापतिप्रभः प्रभञ्जनाऽध्येयजवेन वाजिना।
सहैव ताभिर्जनदृष्टिवृष्टिभिर्बहिः पुरोऽभूत् पुरुहूतपौरुषः॥

(iii) फलानि पुष्पाणि च पल्लवे करे वयोतिपातोद्गतवातवेपिते।
स्थितैः समधायः महर्षिवार्द्धकाद् वने तदातिथ्यमशिक्षि
शाखिभिः॥

(iv) तदर्थमध्याप्य जनेन तद्वने शुका विभुक्ताः पटवस्तमस्तुवन्।
स्वरामृतेनोपजगुश्च शारिकास्तथैव तत् पौरुषगायनीकृताः॥

(v) अवश्यभव्येष्वनवग्रहग्रहा ययादिशा धावति नेधसः स्पृहा।
तृणेन वात्येव तथाऽनुगम्यते जनस्य चित्तेन भृशाऽवशात्मना॥

(vi) इत्थममुं विलपन्तममुञ्चद् दीनदयालु तयाऽवनिपालः।
रूपमदर्शि धृतो यदर्थं गच्छ यथेच्छमथेत्यभिधाय॥

4×3=12[5×3=15]

(ख) किसी **एक** की ही व्याख्या कीजिए–

(i) क्व भोगमाप्नोति न भाग्यभाक् जनः।

(ii) अदृष्टमप्यर्थमदृष्टवैभवात् करोति सुप्तिर्जनदर्शनातिथिम्॥

4×1=4[5×1=5]

(ग) महाकवि बाणस्य स्थितिकाल: क: ?

(घ) कादम्बर्या: मंगलाचरणं लिखतु।

(ङ) राज्ञ: शूद्रकस्य परिचयो लेख्य:।

(च) आचार्यविश्वनाथस्य परिचयो लेख्य:।

(छ) वाक्यस्य किं लक्षणम् ?

(ज) साहित्यदर्पणानुसारं दोषस्य किं लक्षणम् ?

2×8=16[2½×8=20]

**खण्ड–2**

2. अधोलिखित प्रश्नों का समाधान कीजिए–

(क) महाकवि बाण की भाषा-शैली की सप्रमाण समीक्षा कीजिए।

**अथवा**

कादम्बरी के अनुसार विन्ध्याटवी का सोदाहरण वर्णन कीजिए।

8×1=8[10×1=10]

(ख) कादम्बरी के अनुसार पम्पा सरोवर **अथवा** अगस्त्य के आश्रम का वर्णन कीजिए। 8×1=8[10×1=10]



**खण्ड–3**

3. (क) यथेच्छ **दो** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(i) सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्न दुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्।
तदेव धत्ते हृदयेन सज्जनो हरिर्महारत्नमिवातिनिर्मलम्॥

(ii) विधानसंपादितदानशोभितै: स्फुरन्महावीरसनाथमूर्तिभि:।
मखैरसंख्यैरजयत्सुरालयं सुखेन यो यूपकरैर्गजैरिव॥

(iii) अद्यो विधातुरस्थाने सौन्दर्यनिष्पादनप्रयत्न:।

(iv) सर्वथा धिग्विधातारम् असदृशसंयोगकारिणम्।

4×2=8[5×2=10]

(ख) स्वेच्छया **दो** की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए–

(i) नाम्नैव यो निर्भिन्नारातिहृदयो विरचितनारसिंहरूपाडम्बरम्। एकविक्रमाक्रान्तसकलभूवनतलो विक्रमत्रयायासितं भुवनत्रयं च हसति स्मेव वासुदेवम्। अतिचिरकाललग्नमतिक्रान्तकु-नृपतिसहस्रसंपर्ककलंकमिव क्षालयन्ती यस्य कृपाणधाराजले चीरमुवास लक्ष्मी:॥

(ii) आलोक्य च सा दूरस्थितैव प्रचलितरत्नवलयेन रक्तकुवलयदलकोमलेन पाणिना जर्जरितमुखभाजां वेणुलतामादाय नरपतिप्रतिबोधनार्थं सकृत्सभाकुट्टिममाजघान, येन सकलमेव तद्राजकमेकपदे वनकारियुथमिव तालशब्देन युगपदावलितवदनमवनिपालमुखादाकृष्य चक्षुस्तदभिमुखमासीत्।

(iii) सकलभूवनतलरत्नानामुदधिरिवैकभाजनं देव।। विहंगमश्चायमाश्चर्यभूतो निखिलभूवनतलरत्नमिति कृत्वा देवपादमूलमादायागताहमिच्छामि देवदर्शनसुखमनुभवितुम् इति। एतदाकर्ण्य 'देवः प्रमाणम्' इत्युक्त्वा विरराम। उपजातकुतूहलस्तु राजा समीपवर्त्तिनां राज्ञामालोक्य मुखानि 'को दोषः प्रवेश्यताम्' इत्यादिदेश।

(iv) राजा तु तामार्यां श्रुत्वा संजातविस्मयः सहर्षमासन्नवर्तिनम्, अतिमहार्घहेमासनोपरि अमरगुरमिवाशेषनीतिशास्त्रपारगम्, अतिवयसम्, अग्रजन्मानम्, अखिले मंत्रिमण्डले प्रधानममात्यं कुमारपालितनामानमब्रवीत्। 4×2=8[5×2=10]

**खण्ड—4**

4. (क) स्वेच्छया दो की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए—

(i) आस्तां तावत्सर्वम्। अपनयतु नः कुतूहलम्। आवेदयतु भवानादितः प्रभृति कात्स्न्र्येनात्मनो जन्म कस्मिन् देशे, भवान्कथं जातः, केन वा नाम कृतम्, का ते माता, कस्ते पिता, कथं वेदानामागमः, कथं शास्त्राणां परिवयः, कुतः कला आसादितः, किंहेतुकं जन्मान्तराणामनुस्मरणम्, उत वरप्रदानम् ?



(ii) तत्र च शाखाग्रेषु कोटरोदरेषु पल्लवान्तरेषु स्कन्धसंधिषु जीर्णवल्कविवरेषु महावकाशतया विश्रब्ध विरचितकुलायासहस्राणि दुरारोहतया विगतभयानि नानादेशसमागतानि शुकशकुनिकुलानि प्रतिवसन्ति स्म। यैः परिणामविरलदलसंहतिरपि स वनस्पतिरविरलदलनिचयश्यामल इवोपलक्ष्यते दिवानिशं निलीनैः।

(iii) एकस्मिंश्च जीर्णकोटरे जायया सह निवसतः पश्चिमे वयसि वर्तमानस्य कथमपि पितुरहमेको विधिवशात्सूनुरभवम्। अतिप्रबलया चाभिभूता ममैव जायमानस्य प्रसववेदनया जननी मे परलोकमगमत्। अभिमतजायाविनाशशोकदुःखितोऽपि खलु तातः सुतस्नेहादभ्यन्तरे निरुध्य पटुप्रसरमपि शोकमेकाकी मत्संवर्धनपर एवाभवत्।

(iv) अचिराच्च प्रशान्ते तस्मिन्मृगयाकलकले निर्वृष्टमूकजलधरवृन्दानुकारिणि मथानावसानोपशान्तवारिणि सागर इव स्तिमिततामुपगते कानने मन्दीभूतभयोऽहमुपजातकुतूहलः पितुरुत्संगादीषदिव निष्क्रम्य कोटरस्थ एव शिरोधरां प्रसार्य संत्रासतरलतारकः शैववात्किमिदमित्युत्पजातदिदृक्षस्तामेव दिशं चक्षुः प्राहिणवम्। 4×2=8[5×2=10]

(घ) विरुद्ध-हेत्वाभास: क: ?

(ङ) किं नाम उपमानम् ?

(च) ज्ञानस्य याथार्थ्यलक्षणं किम् ?

(छ) किं नाम इन्द्रियम् ?

(ज) कोऽयं आत्मा ?

(झ) कतिविधा: गुणा: ?

(ञ) किं नाम प्रयोजनम् ?

(ट) क: अपवर्ग: ? 2×8=16[2½×8=20]

**खण्ड—अ**

2. (क) प्रमेय क्या है ? विस्तार सहित सोदाहरण समझाइए।

**अथवा**

प्रत्यक्ष प्रमा के करण को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

8×1=8[10×1=10]

(ख) अधोलिखित में से किसी **एक** की व्याख्या कीजिए—

(i) तदेतद् भावानामेव त्रिविधं कारणम्, अभावस्य तु निमित्तमात्रं तस्य क्वचिदप्यसमवायात्। समवायस्य भावद्वयधर्मत्वात्।

(ii) यदा पुनश्चक्षुषा घटरूपसमवेतं रूपत्वादिसामान्यं गृह्यते, तदा चक्षुरिन्द्रियं, रूपत्वादिसामान्यमर्थ:, अनयो सन्निकर्ष: संयुक्तसमवेतसमवाय एव। 8×1=8[10×1=10]



**खण्ड—ब**

3. (क) अधोलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का विवेचनात्मक उत्तर दीजिए—

(i) तर्कभाषा के अनुसार लिङ्गपरामर्श तथा व्याप्ति का निरूपण कीजिए।

**अथवा**

(ii) शब्द प्रमाण का सोदाहरण निरूपण कीजिए।

8×1=8[10×1=10]

(ख) अधोलिखित में से **एक** की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए—

(i) तानि पञ्चरूपाणि पक्षसत्त्वं, सपक्षसत्त्वं, विपक्षव्यावृत्ति:, अवाधितविषयत्वं, असत्प्रतिपक्षत्वं चेति।

(ii) वर्णितानि चत्वारि प्रमाणानि, एतेभ्योऽन्यन्न प्रमाणम् प्रमाणस्य सतोऽत्रैवान्तर्भावात्। 8×1=8[10×1=10]

**खण्ड—स**

4. (क) निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का विवेचनात्मक उत्तर दीजिए—

(i) तर्कभाषा के अनुसार आत्मा का निरूपण कीजिए।

(ii) अपवर्ग-प्राप्ति की प्रक्रिया को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

8×1=8[10×1=10]

Roll No. .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

## M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

# 9016

## SANSKRIT

## (न्याय वैशेषिक)

(Core)

Paper : MSKT-103

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80 / Private : 100

नोट :- प्रथम प्रश्न अनिवार्य है। अन्य चार खण्डों में से **एक** विवेचनात्मक प्रश्न एवं एक सप्रसङ्ग व्याख्या करना अनिवार्य है।

### अनिवार्य प्रश्न

1. निम्नलिखित में से किन्हीं **आठ** वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के उत्तर संस्कृत में दीजिए–

(क) न्यायसूत्रस्य आदिमं सूत्रं किम् ?

(ख) असमवायिकारणस्य उदाहरणं किम् ?

(ग) अनुमानंकथम् ? कतिविधिञ्च ?



(ख) किसी **एक** की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए–

(i) शरीरसंयुक्तं ज्ञानकरणमतीन्द्रियम् 'इन्द्रियम्'। आतीन्द्रियमिन्द्रियमित्युच्यमाने कालादेरपीन्द्रियत्वप्रसङ्गोऽत उक्तं ज्ञानकरणमिति।

(ii) प्रवृत्तिः धर्माऽधर्ममयी वागादिक्रिया, तस्या जगद् व्यवहारसाधकत्वात्। 8×1=8[10×1=10]

### खण्ड–द

5. (क) किसी **एक** प्रश्न का विवेचनात्मक उत्तर दीजिए–

(i) प्रमाण, अवयव, तर्क, वाद पदार्थों का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए।

**अथवा**

(ii) हेत्वाभास, छल, जाति, निग्रहस्थान पदार्थों का निरूपण कीजिए। 8×1=8[10×1=10]

(ख) अधोलिखित में से किसी **एक** की व्याख्या कीजिए–

(i) एकस्मिन् धर्मिणि विरुद्धनानार्थावमर्शः संशयः, स च त्रिविधः।

(ii) उभयसाधनवती विजिगीषुकथा जल्पः, स च यथासंभवं सर्वनिग्रहाणामधिकरणम्, परपक्षे दूषिते स्वपक्षस्थापनप्रयोगावसानश्च। 8×1=8[10×1=10]

Roll No. .....

Total No. of Questions : 5] [Total No. of Printed Pages : 4

(2064)

## M.A. (CBCS) Ist Semester Examination

# 9017

## SANSKRIT

## (सांख्य तथा वेदांत)

(Core)

Paper : MSKT-104

Time : 3 Hours] [Maximum Marks : Regular : 80 / Private : 100

नोट :- सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

### खण्ड—I

1. प्रश्नानाम् उत्तराणि संस्कृतेन लिखत—

(क) सांख्यकारिकानुसारं गुणाः कियन्तो वर्तन्ते ?

(ख) सांख्ये कति प्रमाणानि सन्ति ?

(ग) सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था का भवति ?

(घ) वस्तुनः अनुपलब्धेः कति हेतवः भवन्ति ?



### खण्ड—V

5. किन्हीं दो की सप्रसंङ्ग व्याख्या कीजिए—

(क) प्रायश्चित्तानि पापक्षयसाधनानि चान्द्रायणादीनि।

(ख) अस्याज्ञानस्यावरणविक्षेपनामकमस्ति शक्तिद्वयम्।

(ग) सूक्ष्मशरीराणि सप्तदशावयवानि लिङ्गशरीराणि।

(घ) लयस्तावदखण्डवस्त्वनवलम्बनेन चित्तवृत्तेर्निद्रा।

2×8=16[10×2=20]

(ङ) अविकृतिः इति का भवति ?

(च) वेदान्तसारः इति ग्रन्थः केन रचितः ?

(छ) वस्तुन्यवस्त्वारोपः कः भवति ?

(ज) ब्राह्मणहननादीनि कीदृग्कर्माणि सन्ति ? 2×8=16[2½×8=20]

**खण्ड—II**

2. (क) आचार्य ईश्वरकृष्ण के कृतित्व का विशद विवेचन प्रस्तुत कीजिए।

**अथवा**

सांख्यकारका के अनुसार गुणत्रय का विवेचन कीजिए। 8[10]

(ख) किसी **एक** कारिका की सप्रसंङ्ग व्याख्या कीजिए—

(i) प्रतिविषयाध्यवसायो दृष्टं त्रिविधमनुमानमाख्यातम्।
तल्लिङ्गलिङ्गिपूर्वकमाप्तश्रुतिराप्तवचनं तु॥

(ii) सौक्ष्म्यात्तदनुपलब्धिर्नाभावात्कार्यतस्तदुपलब्धेः।
महदादि तच्च कार्यं प्रकृतिसरूपं विरूपं च॥ 8[10]

**खण्ड—III**

3. (क) सांख्य के अनुसार प्रकृति का विवेचन कीजिए।



**अथवा**

सांख्य के अनुसार भौतिकसर्ग का निरूपण कीजिए। 8[10]

(ख) किसी **एक** कारिका की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए—

(i) जननमरणकरणानां प्रतिनियमादयुगपत्प्रवृत्तेश्च।
पुरुषबहुत्वं सिद्धं त्रैगुण्यविपर्ययाच्चैव॥

(ii) प्रकृतेर्महांस्ततोऽहङ्कारस्तस्माद्गणश्च षोडशकः।
तस्मादपि षोडशकात् पञ्चभ्यः पञ्चभूतानि॥ 8[10]

**खण्ड—IV**

4. (क) वेदान्तसार के अनुसार साधनचतुष्टय का निरूपण कीजिए।

**अथवा**

वेदान्तसार के अनुसार माया का विवेचन कीजिए। 8[10]

(ख) किसी **एक** कारिका की सप्रसङ्ग व्याख्या कीजिए—

(i) सतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विकार इत्युदीरितः।
अतत्त्वतोऽन्यथाप्रथा विवर्त इत्युदाहृतः॥

(ii) भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः।
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन्दृष्टे परावरे॥ 8[10]